

Journal of Bhartiya Hindi Research Review

तुर्की छात्रों का हिंदी भाषा के प्रति दृष्टिकोण।

ओज़ान जेम

आयदन एम.ए. इंडोलॉजी, अंकारा विश्वविद्यालय, अंकारा, तुर्की

अनुरूपी लेखक: ओज़ान जेम

Article Info

ISSN (online): XXXX-XXXX

Volume: 01

Issue: 03

May-June 2024

Received: 15-04-2024

Accepted: 07-05-2024

Page No: 03-04

सारांश

यह शोध लेख तुर्की के छात्रों के दृष्टिकोण से हिन्दी भाषा के प्रति उनके अनुभव, समझ और रुचियों का विश्लेषण करता है। विश्व की महत्वपूर्ण भाषाओं में से एक, हिन्दी का अध्ययन करना विभिन्न देशों के छात्रों के लिए चुनौतीपूर्ण और रुचिकर होता है। तुर्की के छात्रों के लिए यह भाषा और भी विशिष्ट है, क्योंकि उनकी मातृभाषा तुर्की से हिन्दी भाषा में सांस्कृतिक, भाषाई और व्याकरणिक अंतर हैं। इस लेख में तुर्की के छात्रों की हिन्दी भाषा को समझने की प्रक्रिया, उनके समक्ष आने वाली कठिनाइयाँ और हिन्दी के प्रति उनकी धारणा का अध्ययन किया गया है।

कुंजीशब्द: हिन्दी भाषा, तुर्की छात्र, भाषाई दृष्टिकोण, भाषा शिक्षण, तुर्की में हिन्दी अध्ययन

प्रस्तावना

हिन्दी भाषा विश्व की प्रमुख भाषाओं में से एक है, जो भारत और कई अन्य देशों में बोली जाती है। विश्व की कुल जनसंख्या में हिन्दी बोलने वालों की संख्या बहुत अधिक है, और इसका अध्ययन अन्य देशों के छात्रों के लिए एक महत्वपूर्ण शैक्षिक विषय बनता जा रहा है।

तुर्की के छात्रों के लिए हिन्दी भाषा का अध्ययन एक अनूठा अनुभव है। दोनों भाषाओं में भाषाई संरचना, व्याकरण, ध्वन्यात्मकता और शब्दावली में बहुत अंतर है। हिन्दी और तुर्की भाषा की पृष्ठभूमि अलग-अलग भाषा परिवारों से आती हैं। हिन्दी का संबंध इंडो-आर्यन भाषाई परिवार से है, जबकि तुर्की अल्ताईक परिवार से संबंधित है। इस वजह से तुर्की छात्रों के लिए हिन्दी का अध्ययन कठिनाई भरा हो सकता है।

यह शोध लेख तुर्की छात्रों की हिन्दी भाषा के प्रति धारणा, उनकी भाषा सीखने की प्रक्रिया और आने वाली चुनौतियों का विश्लेषण करता है। साथ ही यह भी देखा जाएगा कि तुर्की छात्र किस प्रकार हिन्दी भाषा में अपनी दक्षता विकसित करते हैं।

हिन्दी भाषा का महत्व तुर्की छात्रों के लिए

तुर्की के छात्रों के लिए हिन्दी भाषा का अध्ययन केवल एक भाषा सीखने की प्रक्रिया नहीं है, बल्कि यह उन्हें भारतीय संस्कृति, साहित्य और समाज को समझने का भी अवसर प्रदान करता है। भारत और तुर्की के बीच व्यापारिक और सांस्कृतिक संबंधों के कारण हिन्दी का महत्व तुर्की में बढ़ा है।

तुर्की के विश्वविद्यालयों में हिन्दी भाषा पाठ्यक्रम के रूप में पढ़ाई जाती है, जहाँ छात्र इसे दूसरी या तीसरी भाषा के रूप में चुनते हैं। हिन्दी भाषा के प्रति उनकी रुचि मुख्य रूप से भारतीय सिनेमा, साहित्य, योग और अन्य सांस्कृतिक पहलुओं के कारण होती है। तुर्की के छात्रों का मानना है कि हिन्दी भाषा सीखकर वे भारत के साथ व्यापारिक और सांस्कृतिक संबंधों को मजबूत कर सकते हैं।

तुर्की छात्रों के लिए हिन्दी भाषा सीखने की चुनौतियाँ

हिन्दी और तुर्की भाषा के बीच व्याकरणिक संरचना, शब्दावली और ध्वन्यात्मकता में बहुत अंतर है, जो तुर्की छात्रों के लिए कठिनाई पैदा करता है। हिन्दी की वर्णमाला और तुर्की की वर्णमाला के बीच प्रमुख अंतर है। जहाँ तुर्की में रोमन लिपि का उपयोग किया जाता है, वहीं हिन्दी देवनागरी लिपि में लिखी जाती है, जो छात्रों के लिए नया और चुनौतीपूर्ण होता है।

तुर्की छात्रों को हिन्दी भाषा के शब्दों का उच्चारण भी कठिन लगता है, क्योंकि हिन्दी में तुर्की से भिन्न ध्वनियाँ होती हैं। उदाहरण के लिए, हिन्दी में 'अ' और 'आ' जैसी ध्वनियाँ तुर्की में नहीं पाई जाती। इसके अतिरिक्त, हिन्दी में पुरुषवाचक और स्त्रीवाचक शब्दों का विभाजन भी छात्रों के लिए नई चुनौती प्रस्तुत करता है।

हिन्दी सीखने की प्रक्रिया में तुर्की छात्रों का अनुभव

हिन्दी भाषा सीखने की प्रक्रिया में तुर्की छात्रों का अनुभव विविधता भरा होता है। छात्रों के अनुसार, भाषा के प्रारंभिक चरणों में उन्हें लिपि और ध्वन्यात्मकता को समझने में कठिनाई होती है। लेकिन एक बार लिपि सीख लेने के बाद, वे शब्दावली और व्याकरण में सुधार करने की दिशा में आगे बढ़ते हैं।

हिन्दी भाषा सीखने के दौरान छात्रों का सबसे बड़ा प्रेरणास्त्रोत भारतीय सिनेमा और संगीत होता है। वे इन माध्यमों के जरिए भाषा को बेहतर तरीके से समझने और सीखने की कोशिश करते हैं। इसके अलावा, हिन्दी के व्याकरणिक नियमों और शब्दावली के प्रति उनकी धारणा बदल जाती है, जब वे लगातार अभ्यास करते हैं और भाषा के मूल तत्वों को समझते हैं।

हिन्दी और तुर्की भाषाओं की तुलना

हिन्दी और तुर्की भाषाओं की तुलना करना महत्वपूर्ण है, क्योंकि इससे यह स्पष्ट होता है कि तुर्की छात्रों को किस प्रकार की चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। तुर्की भाषा में व्याकरण सरल होता है, और इसमें क्रियाओं का विभाजन हिन्दी की तरह जटिल नहीं होता। वहीं हिन्दी में पुरुषवाचक और स्त्रीवाचक शब्दों का विभाजन छात्रों को भ्रमित कर सकता है।

तुर्की में शब्दों की ध्वन्यात्मकता हिन्दी से भिन्न है। उदाहरण के लिए, तुर्की में 'क' ध्वनि का उच्चारण हिन्दी की तुलना में अलग तरीके से किया जाता है। इन भाषाई अंतर के बावजूद, तुर्की छात्र हिन्दी को एक समृद्ध भाषा के रूप में देखते हैं, जो उन्हें नए सांस्कृतिक और भाषाई अनुभव प्रदान करती है।

निष्कर्ष

इस शोध से यह निष्कर्ष निकला कि तुर्की के छात्र हिन्दी भाषा के प्रति गहरी रुचि रखते हैं, लेकिन उन्हें भाषा सीखने की प्रक्रिया में विभिन्न प्रकार की चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। तुर्की और हिन्दी की भाषाई संरचना में व्यापक अंतर के कारण छात्रों के लिए प्रारंभिक स्तर पर भाषा को समझना कठिन होता है।

इसके बावजूद, तुर्की छात्रों ने यह महसूस किया कि हिन्दी भाषा के अध्ययन से न केवल उनका भाषाई ज्ञान बढ़ता है, बल्कि वे भारतीय संस्कृति के प्रति भी अधिक संवेदनशील होते हैं। भारतीय सिनेमा और संगीत ने हिन्दी भाषा को सीखने में उनकी मदद की है। तुर्की छात्रों का यह अनुभव बताता है कि भाषा सीखना केवल शब्दों और व्याकरण का अध्ययन नहीं है, बल्कि इसके माध्यम से विभिन्न संस्कृतियों को समझने का अवसर भी मिलता है।

हिन्दी भाषा पर तुर्की छात्रों का दृष्टिकोण सकारात्मक है, और उन्होंने हिन्दी भाषा को एक नई चुनौती और अवसर के रूप में देखा है। हालांकि भाषा सीखने की प्रक्रिया में उन्हें कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है, जैसे कि लिपि, उच्चारण, और व्याकरणिक विभाजन, लेकिन उनकी निरंतर अभ्यास और सांस्कृतिक प्रेरणा ने उन्हें हिन्दी में बेहतर प्रदर्शन करने के लिए प्रेरित किया है।

हिन्दी और तुर्की भाषा के बीच के अंतर को समझने के बाद, तुर्की छात्रों को यह महसूस हुआ कि भाषा सीखने के लिए सबसे महत्वपूर्ण तत्व धैर्य और निरंतरता है। हिन्दी भाषा का अध्ययन उनके लिए एक महत्वपूर्ण अनुभव साबित हुआ है, जो उन्हें भारतीय समाज, संस्कृति और साहित्य के प्रति अधिक जागरूक बनाता है।

संदर्भ सूची

1. शर्मा आर. हिन्दी भाषा शिक्षण के सिद्धांत और विधियाँ. नई दिल्ली: साहित्य अकादमी; c2010.
2. यिलमाज़ ए. तुर्की में हिन्दी भाषा का विकास. भाषा अध्ययन. 2017;23(4):115-125.
3. चौधरी एस. तुर्की छात्रों के लिए हिन्दी भाषा की चुनौतियाँ. हिन्दी भाषा और शिक्षण. 2019;34(2):78-89.
4. तुर्क एस. हिन्दी और तुर्की: एक भाषाई तुलना. भाषाई दृष्टिकोण. 2020;12(3):60-70.
5. कापाडिया एम. तुर्की में भारतीय सिनेमा का प्रभाव. सांस्कृतिक अध्ययन. 2021;16(1):40-52.